Impact Factor : 7.834

गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा पटियाला, श्रीगंगानगर व नेपाल से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

ISSN : 2321-8037
Aug. 2025
Volume 13, Issue 8

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

New Dimension in Research from the Indian Perspective

Special Issue Editor
Dr. Neeraj Ruwali,
Mohit Kumar Sharma
Jyotsna Bhatt

Editor
Dr. Rekha Soni
Chief-Editor
Dr. Naresh Sihag

अनुक्रमाणिका

सं.	लेख का नाम	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	मोहित शर्मा	07–08
2.	भारतीय ज्ञान परंपरा में बौद्ध दर्शन का महत्त्व एवं योगदान	अनूप कुमार जायसवाल	09–14
3.	कंबुज में बौद्ध धर्म : ऐतिहासिक निरंतरता और सांस्कृतिक रूपांतरण का एक अध्ययन	आनन्द विश्वकर्मा	15–18
4.	डॉ. विद्या विंदु सिंह की कहानियों में मानवीय गुण	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	19–22
5.	भारतीय भाषाओं में इतिहास-लेखन की परंपराएं और चुनौतियाँ	अशोक कुमार	23–26
6.	भारतीय राष्ट्रवाद के विविध आयाम	विवेक कुमार, प्रो. ज्योति साह	27–33
7.	समकालीन भारतीय सिनेमा में स्त्री	सुंदरम साहू, डॉ. ऋचा सुकुमार	34–37
8.	धूणी तपे तीर में वर्णित भील और मीणा जाति का संघर्ष	सुजाता, डॉ. पूनम चालिया	38–41
9.	क्रांतिकारी गतिविधियां और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	शुभम कुमार	42–50
10.	मध्य प्रदेश में पंचायती राज व्यवस्था की भूमिका	डॉ. राकेश बघेल	51–57
11.	आयुर्वेद चिकित्सा : वर्तमान ग्रामीण समाज की आवश्यकता	नरेन्द्र कुमार त्रिपाठी	58–62
12.	भारतीय शिक्षा प्रणाली की विकास यात्रा का एक नवीन युग : NEP 2020	डॉ. रमेश राम	63–69
13.	मीरा के काव्य में विरहानुभूति व स्त्री स्वाधीनता	जगदीश	70–73
14.	हिंदी राष्ट्रवादी कवियों के काव्य में साहित्यिक सामाजिक व सांस्कृतिक विरासत के सन्दर्भ में	काजल पौनयाँ, डॉ. अंजू बंसल	74–80
15.	1857 की क्रांति के स्वरूप पर औपनिवेशिक इतिहास लेखन का समीक्षात्मक अध्ययन	कोमल सोनी	81–85
16.	जहाँगीर कालीन चित्रकला	लक्ष्मी कुमारी	86–89
17.	कुमाऊँ (कपकोट) की बदियाकोट भगवती मंदिर का धार्मिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन	माला	90–96
18.	भारतीय शिक्षा प्रणाली का युगांतकारी परिवर्तन : NEP 2020	डॉ. कंचन आर्या	96–104
19.	नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : संभावनाएं एवं चुनौतियां	डॉ. रूपा आर्या	105–110
20.	एकदानैमिषाराये में सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का अध्ययन	डॉ. प्रदीप कटारा	111–115

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक–बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE
PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
SANGAM
Vol. 13, Issue 8
पृष्ठ : 19–22

डॉ. विद्या विंदु सिंह की कहानियों में मानवीय गुण

जे. अशोक कुमार जैन, पी.एच.डी शोधार्थी
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि, असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइन्स एण्ड टेक्नोलॉजी, (VISTAS), पल्लावरम, चेन्नई।

सार :–

मानवता प्रथम धर्म है अर्थात मानवता सर्वोत्कृष्ट धर्म है, यह एक गहरी और व्यापक भावना है जो मनुष्य भीतर निहित, करुणा, सहानुभूति, प्रेम, दया, और एक–दूसरे की सहायता करने की प्रवृति को दर्शाती है। यह वह गुण है जो हमें एक जैविक–जंतु समाज–सांस्कृतिक प्राणी के रूप में परिवर्तित करता है। अनेक साहित्यकार इन गुणों का चित्रण करते है।

डॉ. विद्या विंदु की कहानियों में साहित्यिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक सद्गुणों के साथ–साथ मानवीय गुण भी यत्र–तत्र मिलते हैं। ये मानवीय गुण ही मनुष्य को मनुष्य बनाए रहने में सहायक सिद्ध होते हैं। वरन मनुष्य के भीतर की राक्षसी प्रवृत्ति बहार आकर तांडव करने लगेगी। डॉ. विद्या विंदु सिंह अपनी कलम के माध्यम से मानव समाज को चेता रही है। वह पूर्वजों द्वारा मिली हुई ऐतिहासिक धरोहर को संजोए रखने हेतु प्रयासरत हैं, और आने वाली पीढियों के लिए उसे सुरक्षित कर रही हैं। इनके साहित्य में मानवीय मूल्य एवं जनमानस के उत्थान के लिए अनेक उदाहरणों के माध्यम से अपनी बात की पुष्टि करती हैं।

इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से मानवीय गुण को उजागर करते हुए समाज को नई दिशा प्रदान की है। जब–जब हमारे मानवीय धर्म एवं संस्कृति पर चोट हुआ, और भारतीय इतिहास की अस्मिता खतरे में पड़ी तब–तब ऋषियों ने संत साहित्य की रचना की। उनकी रचनाएं आधुनिक समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं। यह साहित्य मनुष्य को मानवीय गुणों से भर देता है। डॉ. विद्या विंदु सिंह की कहानियाँ भी वास्तव में प्रेरणादाई है, क्योंकि इसमें इन्होंने भारतीय संस्कृति को कायम रखने वाली वसुधैव कुटुंबकम, वास्तविक शिक्षा, उदार सभ्यता, करुणा, अहिंसा आदि मानवीय गुणों की चर्चा की।

"जिनकी यश : सुरभि है सुरभित हम करते हैं पदरज वंदन" – यह एक पंक्ति मात्रा पंक्ति नहीं है बल्कि किसी मंत्र से कम नहीं है। इस मंत्र को पालन करने से मनीषियों का सदा से ही आदर होता है, उनके प्रति सम्मान भी कायम रहता है।

"उत्तरं यत समुद्रस्य हिमाद्रिएश्चैव दक्षिणम वर्ष तत भारत नाम भारती यत्र संततिः।' इस प्रकार भारतीय संस्कृति हमेशा त्यागमयी रही है। इसमें भोग की स्थान नहीं है, त्याग और बलिदान की प्रधानता अधिक रही है। जन्मभूमि को स्वर्ग से अधिक गरिमामयी माना गया है यहां परोपकार एवं मानवता को श्रेष्ठ धर्म माना जाता है।

हमारे शास्त्रों में मानवीय मूल्यों को बढ़ाने के लिए कुछ यम नियमों का विधान रखा गया है। इनमें सर्वप्रथम अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य आदि अनुव्रतों को पालन करने के लिए कहे गए हैं। जो मुख्य रूप से जैन साहित्य में पाए जाते, इन व्रतों से आत्मकल्याण के साथ–साथ विश्व बंधुत्व की भावना भी बढ़ती जाती है। अतः हमें इन मानवीय गुणों को यथाशक्ति पालन करना चाहिए। विद्या विंदु ने अपनी कहानियों में इन्ही मानवीय गुणों का बखूबी चित्रण किया हैं।

'काशीवास' शीर्षक कहानी में लेखिका ने मानव मूल्य का विघटन और यथार्थ की बोध का सजीव चित्रण करते हुए अपनी बात की पुष्टि की हैं कि मानवता का विखंडित रूप हर पल हमें चारों ओर दिखाई दे रहा है। आजकल सब अपने स्वार्थी पूर्ति के लिए एकल परिवार को अधिक चाहने लगे हैं। इसी कारण हमारी सांस्कृतिक परंपरा का बोध प्रतिदिन गिरता जा रहा है। वस्तुतः हमारे रहन–सहन आचार–व्यवहारों में भी बहुत कुछ परिवर्तन आ गया है। अत, मूल्यों का ह्रास चरम पर है।

'काशीवास' कहानी की मानवीय संवेदना का चित्रण हुआ है। इस कहानी में मानवीय मूल्य की बात एक वाक्य से स्पष्ट होता है– "वृंदा ने डॉक्टर से हाथ जोड़कर कहा, "आप तो हमारे लिए ईश्वर का रूप है, हम आपका ऋण कभी नहीं अदा कर पाएंगे। इस वाक्य में वृंदा अपनी कृतज्ञता भाव व्यक्त करती है। एक पागल भिखारिन वृंदा अपने दोनों हाथ जोडकर डॉक्टर के समक्ष खड़ी होती हैं और उन्हें साक्षात ईश्वर का रूप मानती है। यह भाव भारतीय संस्कृति को उजागर करने में सक्षम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सहायता करने वालों को दिल से मान–सम्मान देना चाहिए तथा असहाय लोगों को बिना कुछ अपेक्षा के सहायता करनी चाहिए।

करमा बुआ शीर्षक कहानी की मुख्य पात्र कर्मवती है। इस समाज में व्याप्त अंधविश्वास पर इस कहानी में प्रहार किया गया है। कर्म बुआ एक ऐसी सुंदर हॅसमुख स्त्री है जो खुद दुखी होकर भी दूसरों को सुख पहुँचाना चाहती है। गाँव के हर एक व्यक्ति से उनका नाता बहुत अच्छा था। सादा जीवन उच्च विचार वाली महिला थी। कभी ऊँची आवाज में बात तक नहीं करती थी। लोग प्यार से उसे करमा बुआ कहकर बुलाते थे।

उसे जब यह पता चलता है कि उसके पति बच्चा पैदा करने में असमर्थ है तो वह किसी अनाथ बच्चों को गोद लेने के लिए कर्मवती सोचती है, पर पति मानने के लिए तैयार नहीं होता क्योंकि पति यह मानता था कि पराया खून, तो पराया ही होता है।

करमा अपने कर्म को लेकर चिंतित थी, आखिर वही हुआ जो नहीं होना था। "मेरा नाम तो करमावती था, पर मेरे कर्म तो फूट थे, पर मैं अपने कर्म से तुम लोगों को सुधारना चाहती हूँ। तुम लोग पढ़ने से ही जी न चुराओ 'बारी–बारी' शीर्षक कहानी का मुख्य पात्र श्रीनाथजी है। इनके दो बेटे और दो बेटियाँ हैं। पाँच वर्ष पहले इनकी पत्नी भगवान के प्यारे हो गई थी। बच्चे बारी–बारी से उनके पास रहने का कर्तव्य निभाते हैं। फिर कुछ दिन बाद अपनी परेशानियाँ बताने लगते हैं। वे हर बेटे के घर में चार–चार महीने रहने लगे, जैसे भी हो करके वहाँ समय बिताने लगे। एक दिन उनकी बहू कीर्ति पार्टी के लिए चली जाती है। घर में अकेले रहने से श्रीनाथजी को डर लग रहा था, तो वह अपने गाँव वापस आ जाते हैं। अपनी पत्नी को याद करके दुखी हो जाते हैं। उन्हें ऐसा लगता हें कि उनकी पत्नी शक्ति बनकर उनके समाने आ गई है। वह सोच लेता है कि अब किसी के आगे दया की भीख नहीं मांगेंगा।

इस कहानी के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि आज मध्यवर्गीय तथा कथित अभिजात वर्ग आडम्बर युक्त

जीवन जी रहा है मध्यम वर्गीय परिवार में आज मानव मूल्य गिरता जा रहा है। विद्या विन्दु सिंह मुल्यों के पक्षधर होने के कारन इस मूल्यहीनता को देखकर विचलित होती है। अतः अपनी रचनाओं के माध्यम इस मूल्यहीनता पर प्रहार करती हैं।

'दाई माँ' (बाघ बाबा का चौरा) शीर्षक कहानी का कनू अपने विद्यालय के दलों के साथ अनाथालय, कुष्ठ आश्रम, जेल आदि देखने गया था। वहाँ वह अपनी को देखता है। दादी जो हमेशा उसे सीने से लगा के रखती थी वह आज अनाथ की तरह उस आश्रम में रह रही है। उसने देखा कि दादी डलिया बुन रही थी। उम्र के साथ–साथ उनके चेहरे की झुरियाँ साफ दिख रही थीं। कनू की दादी के चचेरे बहन शकुंतला देवी, बाल विधवा थी। उन्होंने ही कनू के पिता को पाला था। उनके चेहरे पर सफेद दाग से आ गए थे। डॉक्टरों के परामर्श से पता चला कि उन्हें कुष्ठ रोग हो गया था। कुष्ठ रोग से पीड़ित दादी को देखकर कनु का दिल टूट गया। वह और भी दुखी हो गया जब उसने यह देखा कि उसकी दादी के पीछे दीवार पर एक बोर्ड टंगा था जिसमें लिखा गया था कि "कुष्ठ रोग एक रोग है, अभिशाप नहीं। कुष्ठ रोगी से घृणा मत कीजिए, उससे सहयोग कीजिए। कुष्ठ रोगी को दया नहीं सहारा चाहिए। कुष्ठ रोग उपचार से पूरी तरह ठीक हो जाता है। (बाघ बाबा का चौराहा पृष्ट संख्या 30)

इस कहानी के माध्यम से लेखिका ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि मानवीय मूल्यों की रक्षा करना सबका परम कर्तव्य है। यह कहानी नई पीढ़ी के मन पर कुछ प्रभाव छोड़ सकती है। यह कहानी वास्तव में जागरुकता अभियान का मुहिम हैं।

'पुजारिन अइया' कहानी में पुजारी अइया का वास्तविक नाम यमुना था। छोटी यमुना की माँ प्लेग की बीमारी के कारण गुजर जाती है। उस समय घर की पूरी जिम्मेदारियाँ उसके ऊपर आ जाती है्। छोटी उम्र में ही बड़ी–बड़ी जिम्मेदारियों को निभाना सीख गई। पिता को सहारा देती थी और माँ बनकर भाई की देखभाल करती थी। अंग्रेज राज होने के कारण उसके पिता क्रांतिकारियों की मदद करते थे, एक दिन वह अंग्रेजों की गोली का शिकार हो जाता है। पुजारी अइया स्वयं को संभाल कर भाई को सहारा देती है। गाँव के लोग सहायता न करने पर भी वह संघर्ष करना नहीं छोड़ती। अचानक एक क्रांतिकारी नवयुवक से उसकी भेंट होती है। वह उसे देखकर डरने की बजाय ढाँढस से काम लेती है। क्रांतिकारी नवयुवक को अपना समझकर तन, मन से पति के रूप में स्वीकार करती है। जैसे ही उसने बेटी को जन्म दिया उसकी सास उसका तिरस्कार करती है, लेकिन पुजारी ने अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह से निभाती है। सास की सेवा करती है, अपनी बेटी को पढ़ा–लिखा कर उसकी शादी करवाती है। अनगिनित समस्याओं का सामना करते हुए वह मानवीय मूल्यों की मार्ग प्रशस्त करते हुए एक प्रेरणादाई नारी के रूप में अपने आपको समाज के सामने एक मिसाल के रूप में प्रकट करती है। इस कहानी के माध्यम से कहानीकार ने यह प्रतिपादित किया है कि इस बात को लेखिका महोदय ने अपने लेखनी के माध्यम से स्पष्ट करने की कोशिश किए हैं।

"स्पर्श और मौन प्यार की भाषा है"। पुजारी अइया, पृष्ट संख्या. 47

एडियही काकी शीर्षक कहानी में लेखिका ने विमला के माध्यम से समाज में व्याप्त ज्वलंत समस्या को सरल व सहज ढंग से सुलझाने का प्रयास किया है। उन्होंने यह निरुपित किया है कि एक परिवार में नारी की महत्वपूर्ण भूमिका होते है।

विमला की अनेक भूमिकाए होती हैं जैसे पत्नी, बहु, माँ आदि। बहु के रूप में घर में रहने वाले लोगों का ध्यान रखती हैं, बुजुर्ग लोगों का सम्मान करती है और उनसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करती है।

विमला के माध्यम से भारतीय नारी के सभी गुणों को मानवीय मूल्यों को हम इस कहानियों के माध्यम से हम देख पाते है तथा नारी की सहनशीलता, संघर्ष, साहस आदि का परिचय दिया गया है। कहना ना होगा कि लेखिका विद्या बिंदु सिंह भारतीय संस्कृति और संस्कारों के पक्षधर हैं। अतः उन्होंने अपनी बहुमूल्य रचनाओं के माध्यम से यह निरूपित करने का प्रयास किया है कि संसार में मनुष्य बनकर रहना सबसे कठिन है। मानव जन्म लेने से मात्र कोई व्यक्ति मनुष्य नहीं बन जाता, अपितु उसमें मानवीय गुना का होना अनिवार्य है।

व्यक्तित्व के निर्माण में मानवीय गुण सहायक बनते हैं। ईमानदारी, सच्चाई, करुणा, दयालुता और अनुशासन जैसे मानव गुण हमारे आत्मीय वैयक्तिक गुणो को और मजबूत बनाते हैं। यही मानवीय मूल्य सोच, व्यवहार और जीवन शैली को गहराई से प्रभावित करते हैं। जीवन के मूल्य वे होते हैं जो हमारे मन के संतुलन बनाने में सहायक बनते हैं। अतः हमें इन मानवीय गणों को यथाशक्ति बनाए रखना चाहिए तभी आत्मकल्याण के साथ–साथ विश्वबंधुत्व की भावना भी बढ़ती है। विश्व बंधुत्व से ही हम सबका कल्याण हो सकता है।

संदर्भ सूची :–

1. डॉ. विद्या विंदु सिंह, काशीवास, ग्रंथ अकादमी, प्रथम संस्करण, (पृष्ठ संख्या 20)–2012.
2. डॉ. विद्या विंदु सिंह, करमा बुआ, प्रतिभा प्रतिष्ठान, प्रथम संस्करण, (पृष्ठ संख्या–95)–2007.
3. डॉ. विद्या विंदु सिंह, बाघ बाबा का चौरा, सौम्या बुक्स, प्रथम संस्करण–2016.
4. डॉ. विद्या विंदु सिंह, विद्या विंदु सिंह की 21 कहानियाँ, कल्पना प्रकाशन।